अतिरिक्त भाग

कलीसिया की महिला सेविकाएं

जेम्स बेल्स[1]

चाहे हमारे पास विश्वसनीय प्रमाण नहीं है कि नये नियम की कलीसिया में ''डीकनेस'' का पद होता था या नहीं, परन्तु इतना पक्का है कि कलीसिया में महिला सेविकाएं होती थीं। यह साबित करने के लिए कि स्त्रियों को कलीसिया का विशेष कार्य करने के लिए चुना जाता था, हमें यह साबित करने की आवश्यकता नहीं है कि ''डीकनेस'' का पद होता था। इस कारण इस सवाल का हल करने की आवश्यकता नहीं है कि तकनीकी रूप से ऐसा पद था या नहीं; क्योंकि उनका काम तो है। इसके अलावा यदि कोई ऐसा पद था तो कलीसिया में बिना पद या प्रसिद्धि के सेवा न करने वाली स्त्री वैसी मसीही नहीं हो सकती जैसी इस पद के लिए होनी आवश्यक है।

कलीसिया में काम करने वाली

स्त्रियां पौलुस के काम में सहायता करती थीं। फिलिप्पी की कलीसिया ने पौलुस के साथ काम करने के लिए एक भाइ को भेजा (फिलिप्पियों 2:25-28)। पौलुस की सहायता करते हुए इपाफ्रुदितुस ''मसीह का काम'' कर रहा था (फिलिप्पियों 2:29, 30)। पौलुस ने फिलिप्पी की कलीसिया से दो स्त्रियों की सहायता करने का आग्रह किया जिन्होंने सुसमाचार में उसके साथ परिश्रम किया था:

> मैं यूओदिया को भी समझाता हूं, और सुन्तुखे को भी, कि वे प्रभु में एक मन रहें। और हे सच्चे सहकर्मी मैं तुझ से भी बिनती करता हूं, कि तू उन स्त्रियों की सहायता कर, क्योंकि उन्होंने मेरे साथ सुसमाचार फैलाने में, क्लेमेंस और मेरे उन और सहकर्मियों समेत परिश्रम किया, जिन के नाम जीवन की पुस्तक में लिखे हुए हैं (फिलिप्पियों 4:2, 3)।

इन स्त्रियों ने प्रभु के कार्य में सहायता की थी और कलीसिया के लिए उचित था कि उनकी सहायता करती।

कलीसियाओं में प्रभु का कुछ काम करने के लिए स्त्रियों को चुना और उनकी सहायता की जाती थी:

> मैं तुम से फीबे की, जो हमारी बहिन और किंख्रिया की कलीसिया की सेविका है, बिनती करता हूं; कि तुम जैसा कि पवित्र लोगों को चाहिए, उसे प्रभु में ग्रहण करो; और जिस किसी बात में उस को तुम से प्रयोजन हो, उस की सहायता करो; क्योंकि वह भी बहुतों की बहन मेरी भी उपकारिणी हुई है (रोमियों 16:1, 2)।

जो काम वह कर रही थी वह उस मण्डली की निकटता से मेल नहीं खाता था जिसकी वह सेविका थी। रोमियों 16:1, 2 में पौलुस ने रोम के मसीही लोगों को ''किंख्रिया की कलीसिया की (इस) सेविका'' को ग्रहण करने और उसकी सहायता करने के लिए कहा। उसने पौलुस की और कई अन्य लोगों की सहायता की थी। वह जैसा कि पता चलता है, अपने साथ एक सिफारिशी पत्र लेकर गई थी, क्योंकि पौलुस ने रोम की कलीसिया को फीबे का परिचय देकर उसकी ओर से सहायता की विनती की।

कई मसीही नर्सों को जो नाइजीरिया में कईयों की सहायता करती हैं कलीसिया की ओर से सहायता मिलती है। वे सार्वजनिक तौर पर सुसमाचार सुनाने वाली नहीं हैं; परन्तु फिर भी कलीसिया के लिए उपयोगी सेविकांए हैं। कोई कलीसिया यदि उचित समझे, यानी आवश्यकता हो और वह कर सकती हो, तो समाज के बीमार लोगों की सहायता के लिए फुलटाईम सेवा के लिए किसी नर्स की सहायता कर सकती है। परन्तु कुछ कलीसियाओं को जो कलीसिया के इकठ्ठा होने के लिए भवन की देखभाल करने वाले चर्चबैरे की सहायता करती हैं (और यह गलत नहीं है) पवित्र लोगों और पापियों की भौतिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए नर्स की सहायता करना बेकार लगेगा।

यह इस बात का सुझाव देने के लिए नहीं है कि कलीसिया के सभी सेवकों की आर्थिक सहायता कलीसिया की ओर से होनी चाहिए। यदि बिना वेतन के कोई सेवा के लिए आगे नहीं आता तो वह एक आत्मिक निर्धन कलीसिया ही बनेगी।

एल्डरों द्वारा महिलाओं को कलीसिया की सेवा करने के लिए कई तरह से कहा जा सकता है। वे इस बात का ध्यान रख सकते हैं कि प्रभुभोज का सामान लाना है; वे किसी को बपतिस्मा दिए जाने के समय आवश्यक तैयारी सकती हैं। वे प्राथना के लिए लोगों के घरों में जा सकती हैं; और कई ढंग हैं जिन से वे सहायता कर सकती हैं। पौलुस ने दिखाया कि आमतौर पर महिलाओं में कम से कम 1 तीमुथियुस 3:11 में बताई गई महिलाओं की विशेषताएं होनी चाहिए। तीतुस 2:3 में उसने कहा कि बूढ़ी महिलाओं का चाल-चलन पवित्र हो जबकि तीतुस 3:11 कहता है कि महिलाओं को ''गम्भीर'' होना चाहिए। बूढ़ी महिलाओं को चाहिए की जवान महिलाओं को संयमी होना सिखाएं (तीतुस 2:3-5; ASV) यदि वे स्वयं संयमी न हों तो उनके लिए दूसरों को सिखाना कठिन होगा। जवान हों या बूढ़ी, महिलाएं दुर्भावनापूर्ण बातें करने वाली नहीं होनी चाहिए पौलुस ने कहा कि महिलाएं गम्भीर होनी चाहिए (1 तीमुथियुस 3:11) और भी स्पष्ट किया कि बूढ़ी महिलाएं ''पियक्कड़ नहीं'' होनी चाहिए (तीतुस 2:3)।

बूढ़ी स्त्रियों को चाहिए कि ''वे जवान स्त्रियों को चितौनी देती रहें, कि अपने पतियों और बच्चों से प्रीति रखें। और संयमी, पतिव्रता, घर का कारबार करने वाली, भली और अपने अपने पति के आधीन रहने वाली हों, ताकि परमेश्वर के वचन की निन्दा न होने पाए'' (तीतुस 2:4, 5)। 1 तीमुथियुस 3:11 में जिन महिलाओं की बात पौलुस ने की उन्हें इन सब बातों में विश्वासयोग्य होना आवश्यक था; यह सामान्य विवरण हर परिपक्व मसीही की विशेषता होना चाहिए।

कलीसिया को ऐसे सेवको की आवश्यकता है। इस काम को करने के लिए उन्हें एल्डरों द्वारा नियुकत किये जाने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि उन्हें पौलुस के द्वारा परमेश्वर की ओर से काम करने पर लगाया गया है। पौलुस ने तीतुस से बूढ़ी महिलाओं को विशेष निदेश देने सहित (तीतुस 2:3) ऐसी बातें कहने को कहा ''जो खरे उपदेश के योग्य हैं'' (तीतुस 2:1)। कइयों को एल्डरों द्वारा विशेष कार्य करने के लिए ठनियुक्त किया जा सकता है; परन्तु आवश्यक नहीं है कि सेवा के अवसरों को तलाश करने और उनके इस्तेमाल के लिए उन्हें काम पर लगाया जाना आवश्यक हो।

कलीसियां में विधवाएं

आरिम्भक कलीसियों मे कुछ विधवाओं को विधवाओं के विशेष समूह की सूची में रखा गया था (1 तीमुथियुस 5:9) जिन्हें कलीक्सियाकी ओर से सहायता की सकती है। उनमें कुछ विशेष योग्यताएं होना आवश्यक था। पहली तो यह कि जब तक वे अपने बाल बच्चों के सहारे के बिना न हों तब तक कलीसिया की ओर से उन्हें सहायता नहीं होनी चाहिए थी (1 तीमुथियुस 5:3, 4, 16)। वे बेसहारा थीं (1 तीमुथियुस 5:5; ASV)। दूसरी, वह कम से कम साठ वर्ष की हों। तीसरी वह घर-घर मे अनुभवी हों यानी उन्होंने बच्चों को पाला पोसा हो। चौथा वे परदेशियों की देखभाल, पवित्र लोगों के पांव धोने के तुच्छ काम और निराश लोगों को सहारा देने सहित भले भले कामों में लगी रही हों। वास्तव में उन्हें भले काम में सुनाम होना और ''हर एक भले काम में मन'' लगाना आवश्यक था (1 तीमुथियुस 5:10)। वास्तव मे यही विधवाएं थीं जिनकी कलीसिया की ओर से सेवा की जा सकती थी (1 तीमुथियुस 5:16)।

ये महिलाएं कलीसिया में क्या सेवा देती थीं? प्रार्थना करने वाली महिलाएं होने के कारण, प्रार्थना हर मसीही के लिए करना आवश्यक है, उन्हें कलीसिया के लिए और विशेष रूप से हर किसी के लिए प्रार्थना करनी आवश्यक थी। ये वे महिलाएं थीं जिनकी उम्मीद परमेश्वर पर टिकी थी और जो प्रार्थना में लौलीन रहती थीं। उन्हें कभी-कभी प्रार्थना करने वाली नहीं, बल्कि ''दिन रात और प्रर्थाना में लौलीन'' रहना आवश्यक था (1 तीमुथियुस 5:5)। परन्तु वे ऐसी महिलाएं नहीं थीं जो और काम काज छोड़ कर केवल प्रार्थना ही करती हों। प्रार्थना हर मसीही के जीवन का अनिवार्य भाग है, परन्तु मसीही जीवन केवल प्रार्थना से ही नहीं जीया जाता। हम सब पर अलग-अलग ज़िम्मेदारियां हैं और दन विधवाओं पर भी कुछ ज़िम्मेदारियां होंगी जो उनकी योग्यताओं, शिक्षा और शक्ति

के अनुसार हों। वे कुशल घर वालियां रही थीं और अब जवान स्त्रियों की सहायता कर सकती थीं। उन्हें आतिथ्य की समझ थी और पता था कि किसी दु:खी की सहायता कैसे करनी है, इसलिए वे कलीसिया में ऐसी सेवा सम्भाल सकती थीं।

याफा की कलीसिया के सदस्यों में विधवाएं भी थीं:

> याफा में तबीता अर्थात दोरकास नाम एक विश्वासिनी रहती थी, वह बहुतेरे भले भले काम और दान किया करती थी। उन्हीं दिनों में वह बीमार होकर मर गई; और उन्होंने उसे नहलाकर अटारी पर रख दिया। और इसलिए कि लुद्दा याफा के निकट था, चेलों ने यह सुनकर कि पतरस वहां है दो मनुष्य भेजकर उससे बिनती की कि हमारे पास आने में देर न कर। तब पतरस उठकर उन के साथ हो लिया, और जब पहुंच गया, तो वे उसे उस अटारी पर ले गए; और सब विधवाएं रोती हुई उसके पास आ खड़ी हुईं: और जो कुरते और कपड़े दोरकास ने उनके साथ रहते हुए बनाए थे, दिखाने लगीं। तब पतरस ने सब को बाहर कर दिया, और घुटने टेककर प्रार्थना की; और लोथ की ओर देखकर कहा; हे तबीता उठ: तब उस ने अपनी आंखें खोल दीं; और पतरस को देखकर उठ बैठी। उस ने हाथ देकर उसे उठाया, और पवित्र लोगों और विधवाओं को बुलाकर उसे जीवित और जागृत दिखा दिया (प्रेरितों 9:36-41)।

वचन यह नहीं बताता कि दोरकास उन विधवाओं में से एक थी जिनकी सहायता कलीसिया की ओर से होती थी। जो ''सचमुच विधवा'' थीं उन्हीं का नाम बेसहारा होने के कारण कलीसिया से सहायता पाने वालों में लिखा जाता था (1 तीमुथियुस 5:3-5; ASV); यानी उनका कोई बच्चा नहीं था जो उनकी सहायता कर सकता। यदि उसका कोई बच्चा उनकी सहायता कर सकता तो उनके लिए उनकी सहायता करनी आवश्यक थी ताकि कलीसिया पर बोझ न पड़े। यही नियम उस विधवा पर भी लागू होता था जो अपनी सहायता स्वयं कर सकती थी। यदि वह अपनी सहायता कर सकती थी तो अपनी सम्भाल के लिए कलीसिया पर बोझ बनने का कोई कारण नहीं था। कलीसिया को उन्हीं विधवाओं की सहायता करनी थी जो सचमुच में विधवा हों (1 तीमुथियुस 5:16)। ऐसा प्रतीत होता है कि दोरकास के पास अपनी सहायता करने के साधन थे, क्योंकि वह दूसरों की सहायता कर सकती थी। उसे ''बहुतेरे भले भले काम और दान'' करने वाली के रूप में वर्णित किया गया है (प्रेरितों 9:36)। वह ''सचमुच विधवा'' थी या नहीं, पर वह मसीह के लिए भले काम करके कलीसिया की सेवा अवश्य करती थी। वह विधवाओं से जुड़ी हुई रही और उनकी उसके साथ विशेष निकटता थी। हम पढ़ते है कि जब दारेकास की मृत्यु हुई तो ''सब विधवाएं रोती हुई [पतरस] के पास आ खड़ी हुईं: और जो कुरते और कपड़े दोरकास ने उनके साथ रहते हुए बनाए थे, दिखाने लगीं'' (प्रेरितों 9:39)। परन्तु ''उनके साथ'' का अर्थ आवश्यक नहीं कि विधवाओं में से एक होने के रूप में ''उनके साथ'' हो; इसका अर्थ इतना भर हो सकता है कि ''जब वह जीवित थी।'' उसका परिवार न होने का

इस बात से संकेत मिलता है कि उसे जिलाए जाने पर उसके परिवार को सौंपे जाने के बजाय ''पवित्र लोगों और विधवाओं को'' सौंपने की बात मिलती है (प्रेरितों 9:41)। जहां तक वचन बताता है, हो सकता है उसने कभी विवाह न किया हो; परन्तु वह ऐसी स्त्री थी जो मसीह की सेवा करती थी और कलीसिया में विधवाओं का समूह था।

कईयों का विचार है कि 1 तीमुथियुस 3:11 वाली महिलाएं 5:3 वाली सचमुच की विधवाएं थी। यह सच है कि इन विधवाओं में 1 तीमुथियुस 3:11 वाली विधवाओं की विशेषताएं थी; चाहे 1 तीमुथियुस 3:11 वाली विधवाओं की योग्यताओं में सीमित नहीं थी। इन ''स्त्रियों'' के लिए ''सचमुच विधवाएं'' होने के लिए पौलुस द्वारा उन्हें ऐसा नाम देना ही काफी था; पर उसने नहीं दिया। विधवाओं के विषय में कही गई किसी बात में यह संकेत नहीं है कि पौलुस 1 तीमुथियुस 3:11 की चर्चा को जारी रख रहा था।

सचमुच की विधवाओं ने तीतुस 2:3 में बताई ''बूढ़ी स्त्रियों'' के काम करने के योग्य होना था, परन्तु ऐसा कोई संकेत नहीं है कि ''बूढ़ी स्त्रियों'' में वही योग्यताएं होनी आवश्यक थीं जो ''सचमुच विधवाओं'' में होनी आवश्यक थीं।

सारांश

स्त्रियां अपने कौशल से मसीह की सेवा कर सकती हैं; और दोरकास की तरह, कई तो अपने सुई-धागे से सेवा कर सकती हैं। नये नियम की कलीसिया में स्त्रियां अपनी उन सब योग्यताओं से सेवा करती थीं जिनका हमने वर्णन किया है। वे कलीसिया में स्त्री की भूमिका के बाइबली नियमों को ध्यान में रख कर अपनी योग्यताओं, शिक्षा, अवसरों से भी सेवा कर सकती थीं। हर मण्डली में महिला सेविकाएं होती हैं, उन्हें औपचारिक रूप से चुन कर नियुक्त किया गया हो या न। हर कलीसिया में स्त्रियां होती हैं जिन पर कलीसिया को पता है कि यह निर्भर हो सकती है और जिन्हें यह बुलाती है और जो स्वत: ही कुछ आवश्यकताओं को पूरा करती हैं।

टिप्पणी

[1]यह पाठ जेम्स बेल्स, *दि डीकन एंड हिज़ वर्क* (शेरेवपोर्ट, लुइसियाना: लैंबर्ट बुक हाउस, 1967), 79-83 से लिया गया है। अनुमति लेकर छापा और इस्तेमाल किया गया।

1 कुरिन्थियों 11 पर
नील लाइटफुट[1] की राय

यूनानी समाज में स्त्री की स्थिति अलग-अलग समयों और जगहों में अलग-अलग थी, परन्तु अधिकतर वह पुरुष के अधीन ही होती थी। स्त्री घरेलू मामलों को छोड़ आम तौर पर अनपढ़ ही होती थी; वह राजनैतिक जीवन में भाग नहीं लेती थी और पत्नी के रूप, गृहिणी के रूप में या फिर दासी के रूप में पुरुष की सम्पत्ति ही होती थी। रोमी स्त्रियों को अधिक स्वन्त्रता थी, विशेषकर गणतंत्र के बाद के समयों में; और मसीही युग के आरम्भ से कई बातों में स्त्री को पुरुष के समान दर्जा दिया जाने लगा।

असमानता की इस पृष्ठभूमि के उलट पौलुस ने यीशु के नमूने का अनुसरण करते हुए पुरुषों और स्त्रियों दोनों को सुसमाचार सुनाया। उसने फिलिप्पी में लुदिया और अन्य स्त्रियों को (प्रेरितों 16:13), थिस्सलुनीके में मकदुनिया की प्रमुख स्त्रियों को (प्रेरितों 17:4) और बिरीया में (प्रेरितों 17:12) वचन सुनाया। अपने पत्रों में उसने पुरुषों और स्त्रियों दोनों को सलाम भेजा (रोमियों 16; फिलेमोन 2)। दो बार उसने प्रिसकिल्ला और अक्विला की दो भाग वाली टीम को सलाम दिया, जिसमें प्रिसकिल्ला का नाम पहले दिया गया (रोमियों 16:3, 4; 2 तीमुथियुस 4:19)। रोमियों 16 में पौलुस ने नाम लेकर अठारह पुरुषों और ग्यारह स्त्रियों को सलाम भेजा। उसने अन्य स्त्रियों लोइस और यूनीके (2 तीमुथियुस 1:5); फिलिप्पी की यूओदिया और सुन्तुखे का भी नाम दिया, जिन्होंने "[उसके] साथ सुसमाचार फैलाने में परिश्रम किया" था (फिलिप्पियों 4:2, 3); और कुरिन्थुस के खलोए (1 कुरिन्थियों 1:11) का भी नाम दिया। खलोए के घराने से ही चाहे वे स्वतन्त्र थे या दास, पौलुस को कुरिन्थुस की कलीसिया में पाई जाने वाली कई गड़बड़ियों का पता चला। इसलिए यह याद रखा जाना आवश्यक है कि जब पौलुस ने कुरिन्थुस में स्त्रियों के सिर ढांपने की बात लिखी तो वह सब स्त्रियों को डांटने के लिए नहीं था।

कठिनाइयों के कारण

कई बातें 1 कुरिन्थियों 11 को समझना कठिन बना देती है। पहली कठिनाई यह है कि हमें प्राचीन जगत के समयों के रीति-रिवाज़ की उतनी जानकारी नहीं है जितना हम जानना चाहते हैं। बड़ी दृढ़ता से यह दावा किया जाता था कि व्यावहारिक रूप में प्राचीन स्त्रियां हर जगह बाहर निकलते समय बुर्का पहनती थीं। एक के बाद एक टीकाओं में यह बात दोहराई जाती है, परन्तु अब यह इस बात पर विशेषज्ञों में सचमुच असहमति का विषय है, विशेषकर यूनानी स्त्रियों के प्रधान होने पर। हमें ऐसे संकेत मिलते हैं कि यूनानी स्त्री घर से बाहर ओढ़नी लेने को हमेशा पाबन्द नहीं होती थी। कई बार पर्वों के जुलूसों में स्त्रियों के

बारे में विस्तार से बताया गया है, परन्तु पर्दे का कोई उल्लेख नहीं है। सम्राज्ञियों और देवियों को बिना पर्दे के चित्रित किया जाता है।

दूसरी ओर पहली शताब्दी ईस्वी के अन्त में लिखते हुए प्लूटार्क ने एक अलग तस्वीर पेश की। उसने कहा कि स्पार्टा के लोगों में लड़कियां घर से बाहर बिना पर्दे के जाती थीं, जबकि विवाहित स्त्रियां पर्दा किए होती थीं।[2] उसने साफ कहा कि स्त्रियों के लिए सिर ढांप कर और पुरुषों का नंगे सिर बाहर जाना आम बात थी।[3] परन्तु इसी सम्बन्ध में उसने कहा कि पहले स्त्रियों को अपने सिर बिल्कुल ढांपने की अनुमति नहीं थी।[4] प्लूटार्क ने इसी जगह कहा कि पुरुषों के लिए अपने बाल कटवाना और स्त्रियों के लिए अपने बाल बढ़ने देने की रवायत थी।

स्त्रियों के पर्दे में होने पर प्लूटार्क की बातों को पूर्व में पाई जाने वाली प्रथाओं के रूप में पहचाना जाता है। तरसुस में बाहर जाते समय स्त्री पूरी तरह से अपने आप को ढांप लेती थी।[5] यरूशलेम में कोई स्त्री घर से निकलते समय, दो पर्दों से अपने आप को ढांपती थी और यदि वह बिना पर्दे के बाहर चली जाए तो उसके पति को उसके मूढ़ कार्य के कारण छोड़ देने का अधिकार, बल्कि दायित्व था।[6] सुदूर पूर्व में, अश्शूरी लोगों में नियम इससे भी कठोर था: स्त्रियां पर्दा करती थीं, जबकि वेश्याओं को मृत्यु के भय से नंगे सिर रहना होता था।[7]

एक दूसरी कठिनाई यह है कि हमें कुरिन्थी कलीसिया की समस्याओं की उतनी जानकारी नहीं है। वहां के मसीही लोगों ने पौलुस को लिखा था और उससे कुछ प्रश्न पूछे थे (1 कुरिन्थियों 7:1)। इन प्रश्नों के उसके उत्तर अध्याय 7 से आरम्भ होते हैं; पौलुस के उत्तरों के संकेत ''उन बातों के विषय में'' (7:1; 8:1; 12:1) शब्दों में दिए गए हैं। इन संकेतों के बाद हम इन प्रश्नों के टुकड़े इकट्ठे कर सकते हैं; परन्तु हमारे पास कुल मिला कर पौलुस के उत्तर ही हैं, जिन्हें हम परोक्ष रूप से ही समझ सकते हैं। हम टेलिफोन पर हुई बातचीत से इसकी तुलना कर सकते हैं, जिसमें केवल एक ओर से होने वाली बात ही सुनी जा सकती है। कुरिन्थुस के लोगों ने पौलुस को कई मामलों के बारे में लिखा था। हमारे पास उनका पत्र नहीं है; यानी टेलिफोन का उदाहरण इस्तेमाल करें तो हमें उनकी ओर से होने वाली बातचीत सुनाई नहीं देती। हम केवल पौलुस को ही सुन सकते हैं और उसकी बातें आमतौर पर ऐसे विषयों पर होती हैं, जिनसे हम अपरिचित हैं। इससे यह समझने में सहायता मिलनी चाहिए कि पर्दे पर इन आयतों को समझना हमारे लिए इतना कठिन क्यों है ?

जो पौलुस ने कहा

1 कुरिन्थियों 11:2 का आरम्भ एक नये भाग से होता है, जिसमें सार्वजनिक आराधना से सम्बन्धित बातें हैं। अध्याय का अन्तिम भाग बेशक, सार्वजनिक आराधना के बारे में है और हम आयत 2 के ''मैं तुम्हें सराहता हूं'' और आयत 17 के ''मैं तुम्हें नहीं सराहता'' में निकट सम्बन्ध देखते हैं। इसके अलावा 4 और 5 आयतें प्रार्थना करने और भविष्यवाणी करने पर हैं, जो आमतौर पर आराधना में होने वाली गतिविधियां हैं। यदि एक ओर से होने

वाली बातचीत को सुनना और कुछ हद तक यह तय करना संभव हो कि दूसरी ओर से क्या कहा गया है, तो शायद कुरिन्थुस में पाई जाने वाली परिस्थिति की कुछ कल्पना की जा सकती है। कुरिन्थुस के पुरुषों और स्त्रियों को आत्मा के अद्‌भुत दान दिए गए थे (1 कुरिन्थियों 12:4-31)। इन दानों में भविष्यवाणी करने का दान भी था, जिस दान से व्यक्ति आत्मा की प्रेरणा से शिक्षा देने के योग्य हो जाता था। स्त्रियां भी भविष्यवाणी कर सकती थीं। क्या उन्हें भविष्यवाणी के इस दान को पुरुषों की उपस्थिति में इस्तेमाल करने की अनुमति थी? यदि हां, तो क्या उन्हें ओढ़नी के नीचे से ईश्वरीय संदेश देना था या उन्हें मसीह में अपनी स्वतन्त्रता का इस्तेमाल करना था, अपने पर्दे को उतार देना और उन लोगों में, जो परमेश्वर का परिवार थे, बिना किसी रुकावट के भविष्यवाणी करनी थी? कुरिन्थी लोगों ने पौलुस से ऐसे ही प्रश्न पूछे थे या ऐसे मामलों के बारे में खलोए के घराने के द्वारा पौलुस तक बात पहुंची थी। कुरिन्थियों के लिए और पौलुस के लिए यह महत्वपूर्ण विषय थे, क्योंकि प्राचीन जगत में पहनावे के ढंग को कौमी रीति-रिवाज या नैतिक व्यवहार के संकेत के रूप में माना जाता था। रीति-रिवाज चाहे जो भी थे, प्राचीन लोग इससे विचलित न होने में वे सतर्क थे।

पौलुस ने कुरिन्थियों को साफ बताया कि उनकी स्त्रियां सार्वजनिक सभाओं में पर्दे में रहें। इसका अर्थ था कि पहली शताब्दी के अन्त में प्लूटॉर्क ने जिन रीति-रिवाजों की बात की वे कुरिन्थुस में प्रचलित थे। यदि उनके समाज में स्त्री के लिए अपने बाल कटवाना या नंगे सिर प्रार्थना करना बीते समय की बात हो गई होती तो उसे इतना ज़ोर देकर समझाने की आवश्यकता न होती। पौलुस के तर्कों को चौहरे नमूने के अनुसार फिर से आकार दिया जा सकता है।

1. *धर्मशास्त्रीय तर्क।* तर्क ''धर्मशास्त्रीय'' है, क्योंकि यह परमेश्वर पर केन्द्रित है। पौलुस की बात यहां मसीह से आरम्भ होती है, पुरुष और स्त्री तक नीचे को काम करती है, और फिर परमेश्वर की ओर ऊपर को आती है। पौलुस ने ''सिर'' शब्द का इस्तेमाल किया ''... पुरुष का सिर मसीह है और स्त्री का सिर पुरुष है और मसीह का सिर परमेश्वर है'' (आयत 3)। ''सिर'' का अर्थ या तो ''मूल'' है या ''श्रेष्ठता''; बाद वाला शब्द अधिक उपयुक्त है, क्योंकि वचन कहीं और यह नहीं सिखाता कि परमेश्वर मसीह का मूल है, परन्तु मसीह को परमेश्वर के अधीन के रूप में दिखाया गया है, वह अधीनता, जिसे उसने मनुष्य बनकर स्वीकार किया। इसी प्रकार स्त्री या शायद ''पत्नी'' (यदि पौलुस केवल पति/पत्नी के सम्बन्ध की ही बात कर रहा था) का काम पुरुष के अधीन रहना है। पौलुस यह सिखा रहा था कि मसीह पुरुष के ऊपर है, पुरुष स्त्री के ऊपर है और परमेश्वर सबके ऊपर है। सिर ढांपना अधीनता का प्रतीक है, जिस कारण पौलुस ने तर्क दिया कि पुरुष के लिए सिर ढांपना अपमान की बात है और स्त्री के लिए भी सिर न ढांपना अपमान की बात है। यदि स्त्री ने नंगे सिर रहना हो तो वह अपने बाल कटवा ले या मुंडवा ले, जो कुरिन्थुस में निर्लज्जता का प्रतीक था। पौलुस ने 7 से 9 आयतों में अपना धर्मशास्त्रीय तर्क जारी रखा। अधीनस्थ के रूप में स्त्री की स्थिति सृष्टि की तरतीब का भाग है। पुरुष को

परमेश्वर के स्वरूप पर बनाया गया और वह उसकी महिमा का प्रतिबिम्ब है; और परमेश्वर की तरह पुरुष अधिकार का इस्तेमाल करता है। स्त्री पुरुष की महिमा को दिखाती है, क्योंकि उसकी पसली में से निकाली गई थी और उसके लिए बनाई गई थी। बाद की अभिव्यक्ति का अर्थ है कि स्त्री ने उसकी सहायक होना था न कि यह कि उसने उसकी दासी या स्वार्थी सम्पत्ति होना था।

2. *स्वर्गीदूतीय तर्क।* स्त्री को ''स्वर्गदूतों के कारण'' (आयत 10) सिर ढांपना आवश्यक है। यह धर्मशास्त्रीय तर्क के निष्कर्ष में दिया गया एक अतिरिक्त तर्क है। इस बात पर हम बाद में आएंगे।

3. *समाजशास्त्रीय तर्क।* इस तर्क को ''समाजशास्त्रीय'' कहा जा सकता है, क्योंकि यह उनके समाज से जुड़ा है। 13 से 15 आयतों में पौलुस ने उनके अपने न्याय की ओर ध्यान दिलाया कि कुरिन्थुस में शोभा देने वाली और उचित बात क्या थी। वह कह रहा था, ''तुम आप ही न्याय करो'' (देखें 10:15)। ''क्या *तुम्हें* यह उपयुक्त लगता है कि कोई स्त्री बिना सिर ढांपे प्रार्थना करें? क्या यह स्वाभाविक नहीं है कि पुरुष छोटे बाल रखे और स्त्री लम्बे बाल? यदि स्त्री को लम्बे बाल रखने आवश्यक हैं तो यह अपने आप में संकेत हैं कि उसे सभा में सिर ढांपना चाहिए।''

4. *उपदेशक तर्क।* कलीसियाओं के व्यवहार की ओर ध्यान दिलाते हुए, यह पौलुस का अन्तिम तर्क है: ''परन्तु यदि कोई विवाद करना चाहे तो यह जान ले कि न हमारी और न परमेश्वर की कलीसियाओं की ऐसी रीति है'' (आयत 16)। इसका अर्थ यह नहीं हो सकता कि ''यदि कोई इस पर विवाद करता है या मुश्किल डालता है तो पूरा विषय खारिज हो जाता है।'' पौलुस ने स्त्रियों के पर्दे का इतना लम्बा तर्क देकर विषय को एक ही वाक्य से समाप्त नहीं करना था। न ही उसके कहने का अर्थ यह लगता है कि ''यदि फिर भी कोई झगड़ा करना चाहता तो याद रखे कि झगड़ा करना न तो हमारी रीति है और न कलीसियाओं की।'' यहां उसकी मंशा झगड़ालू मन की निन्दा करनी उतनी नहीं जितनी किसी भी सम्भावित आपत्ति का अतिरिक्त उत्तर देने की है। एक अर्थ में उसने कहा, ''यदि स्त्रियों के सिर ढांपने पर कोई और सवाल खड़ा होता है तो मैं यह जोड़ूंगा कि इसके उलट करना न तो प्रेरितों की रीति है और न साधारण कलीसियाओं की।''

उठने वाले प्रश्न

आइए पौलुस की शिक्षाओं से उठने वाले कुछ प्रश्नों पर विचार करते हैं। इन्हें संक्षेप में देखकर हमें इन समस्याओं की बेहतर ढंग से समझ आएगी।

1. क्या पौलुस यहां सचमुच पर्दे की बात कर रहा था? इस पर कई विचार हैं। एक तो यह है कि लम्बे बाल ओढ़नी के लिए दिए गए हैं यानी स्त्री के बाल उसे (*यू.:* anti, जिसका अर्थ ''के बजाय'' है) ओढ़ने के लिए दिए गए हैं। यूनानी शब्द *anti* आमतौर पर विकल्प का संकेत देता है; इससे यह सुझाव मिलेगा कि स्त्री के लम्बे बाल ओढ़नी के रूप में होने चाहिए और इससे बढ़कर नहीं। परन्तु यह 5 और 6 आयतों से मेल नहीं खाता। यदि

ओढ़नी केवल लम्बे बाल ही हैं तो यह बहस करने की कोई आवश्यकता नहीं है कि नंगे सिर होने का अर्थ सिर मुंडवाना है। यह पौलुस के तर्क को केवल घिसी-पिटी बात बना देगा।

एक और विचार यह है कि ओढ़नी विशेष प्रकार की बाल-सज्जा को कहा गया है। स्त्री को अपने सिर के बालों को सहेजने पर सिर ढांपा रहता था, बाल न बनाने अर्थात खुले छोड़ने पर नंगे सिर कहा गया है। यह विचार इस बात पर ज़ोर देता है कि आयत 4 में यूनानी अभिव्यक्ति का मूल अर्थ ''सिर से उतारना'' है। परन्तु यह प्लूटार्क में मिलने वाली इसी संरचना के बल को नज़रअंदाज़ कर देता है जिसका स्पष्ट अर्थ कपड़े से ''सिर ढांपना'' है[9] यही कारण है कि लैक्सिकनों और अनुवादों में सिर पर पर्दे के शब्दों वाली आयत में सहमति है।

2. आयत 10 में ''स्वर्गदूतों के कारण, अधिकार अपने सिर पर रखे'' का क्या अर्थ है? यह वाक्य बहुत कठिन है। सम्भवतया पौलुस ''अधिकार'' का इस्तेमाल, जिनके लाक्षणिक प्रयोग के रूप में हो, जिसका संकेत है कि पर्दा उस अधिकार का संकेत है, जिसके स्त्री अधीन है? ''स्वर्गदूतों के कारण'' यह आवश्यक क्यों होना था? सम्भवतया क्योंकि स्वर्गदूत जिनके पास सृष्टि का ईश्वरीय क्रम है, उन्हें आराधना सभाओं में उपस्थित होते दिखाया गया है (देखें भजन संहिता 138:1)। इसी कारण कुमरान के साहित्य में समानताएं हैं।[10]

3. क्या यहां पर पौलुस की शिक्षा 1 कुरिन्थियों 14:34 (''स्त्रियां कलीसिया की सभा में चुप रहें'') और 1 तीमुथियुस 2:12 (''और मैं कहता हूं, कि स्त्री न उपदेश करे, और न पुरुष पर आज्ञा चलाए, परन्तु चुपचाप रहे'') में दिए उसके निर्देशों के उलट है? नहीं: क्योंकि उन आयतों में वह सभाओं में स्त्रियों के चुप रहने की बात कर रहा था,[11] और इस आयत में वह सभा में स्त्रियों के अधीन रहने की बात कर रहा था। परन्तु 1 कुरिन्थियों 11:5 स्त्री के प्रार्थना करने और भविष्यवाणी करने के बारे में नहीं कहता? हां: परन्तु विशेष रूप में पौलुस वहां पर आत्मा के दानों की बात कर रहा था। आत्मा की अगुआई में भी प्रार्थना करने या भविष्यवाणी करने पर स्त्री के लिए पर्दा आवश्यक था।

4. ओढ़नी ओढ़ने पर पौलुस की शिक्षा आज कैसे लागू होती है? मेरे विचार से, यह लागू नहीं होती। क्योंकि सभा में कुरिन्थी स्त्रियों का नंगे सिर होना उनके समाज के लिए चौंकाने वाला और अपमानजनक होता था, जो इतना अभद्र था कि वे वेश्याओं की तरह अपने बाल कटवा सकती थीं। आज अधिकतर समाजों में स्त्री के लिए बिना ओढ़नी के होना या बाल कटे होना, चौंकाने वाला या अनैतिक नहीं माना जाता। ''आपस में पवित्र चुम्बन से नमस्कार'' (रोमियों 16:16क) ऐसी प्रथा है जो अब बदल चुकी है और पौलुस यहां पर ऐसी ही एक और प्रथा की बात कर रहा था, जिसका हमारे समाज के लिए कोई अर्थ नहीं है।

5. क्या लम्बे और छोटे बालों पर पौलुस की शिक्षा आज लागू होती है? बेशक, प्रश्न यही उठता है कि लम्बे बाल कितने लम्बे होने चाहिए और छोटे कितने छोटे। दोनों बातें

आपस में जुड़ी हुई हैं। यह ध्यान रखा जाना चाहिए कि पौलुस ने भी इसे समाजशास्त्र के दायरे में रखा। इस बात पर उसका पूरा तर्क यह ध्यान में रखते हुए था कि कुरिन्थी लोग किसे सही और उपयुक्त मानते हैं, पौलुस ने पूछा, ''क्या स्वाभाविक रीति से भी तुम नहीं जानते?'' जिससे उसका अर्थ स्वाभाविक भावनाओं से था न कि प्राकृतिक नियमों से। यह उसके ''तुम स्वयं ही निर्णय करो'' जैसे तर्क के साथ रखने वाली बात है। बेशक, आज हम बालों की लम्बाई और ऐसी बातों पर मज़बूत प्राथमिकताएं रखते हैं, परन्तु पौलुस के समाजशास्त्रीय तर्क का इस्तेमाल (जो उस समाज से जुड़ा था) करके और इसे आज के लोगों पर नैतिक दायित्व के रूप में थोपना सही नहीं होगा।

सारांश

कुरिन्थुस की स्थिति के साथ इस सम्बन्ध में पौलुस की शिक्षाओं से कई बहुत हल्की बातें मिलती हैं। सड़क के साथ-साथ कुछ प्रतीक-चिह्नों से आगे बढ़ना कठिन है, परन्तु कुछ सच्चाइयां स्पष्ट हो जाती हैं। मसीहियत स्त्री को नपुंसक बनाने के लिए नहीं आई। यह उसे नारी के रूप में ऊपर उठाती और सम्मान देती है। यह सही है कि मसीह में न काई नर है और न नारी। इस आयत का पूरा वाक्य है ''अब न कोई यहूदी रहा और न यूनानी; न कोई दास, न स्वतन्त्र; न कोई नर, न नारी; क्योंकि तुम सब मसीह यीशु में एक हो'' (गलातियों 3:28)। पौलुस ने यहूदी और यूनानी के बाहरी अन्तरों को पहचाना। उसने फिलेमोन को जो स्वामी था, और उनेसिमुस से जो दास था, में अन्तर किया। यहां पौलुस ने कुरिन्थी लोगों को स्त्रियों और पुरुषों बीच अन्तर मानने को कहा। उसका तर्क केवल समाजशास्त्रीय ही नहीं था, बल्कि सृष्टि के क्रम में बार-बार ले जाता हुआ धर्मशास्त्रीय भी था। प्रथा के विपरीत सृष्टि का क्रम हर समय और हर स्थान में मान्य है। बाहरी तौर पर पुरुषों और स्त्रियों में भिन्नाएं हैं, और इन भिन्नताओं को माना जाना आवश्यक है। परन्तु आत्मिक तौर पर मसीह में सब एक हैं। मसीह का धर्म लोगों को इकट्ठे करता है।

टिप्पणियां

[1]नील लाइटफुट का यह उद्धरण लेखक की अनुमति से लिया गया और पुन: मुद्रित किया गया है। [2]करिलुस *सेइंग्स ऑफ़ स्पार्टन्स,* 2. [3]प्लूटार्क, *द रोमन क्वेश्चंस,* 14. [4]वही. [5]सर विलियम रैमसे, *द सिटीज़ ऑफ़ सेंट पॉल* (लंदन: हॉडर एण्ड स्ट्राउटन, 1907; रिप्रिंट, ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1960), 201-05. रैमसे ने डियो क्रिसोस्टोम के कामों के आधार पर निष्कर्ष निकाला, जिसने दूसरी शताब्दी के आरम्भ में लिखा था। [6]जर्मियास, *जरूसलेम इन द टाइम ऑफ़ जीज़स,* 359-60. [7]प्राचीन पर्दे की विभिन्न प्रथाओं पर *थियोलॉजिकल डिक्शनरी ऑफ़ द न्यू टैस्टामेंट,* संपा. गरहरड किटल, अनु. व संपा. ज्योफरी डब्ल्यू. ब्रोमिले (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. इर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1964), 3:562 अच्छा स्रोत है। [8]प्लूटार्क, *सेइंग्स ऑफ़ रोमन्स,* 13. [9]*थियोलॉजिकल डिक्शनरी ऑफ़ द न्यू टैस्टामेंट,* 2:574 के साथ तुलना करें। [10]जे. ए. फिजमायर, ''ए फ़ीचर ऑफ़ कुमरान एंजियोलॉजी एण्ड द एंजिल्स ऑफ 1 कुरिन्थियन

11:10,'' *न्यू टैस्टामेंट स्टडीज़* (1957), 4:48–58; एच.जे.कैडबरी, ''ए कुमरान पैरेलल टू पॉल,'' *हारवर्ड थियोलॉजिकल रिव्यू* (1958), 51:1–2.

[11]जे. डब्ल्यू. रॉबर्ट्स ने *लैटर्स टू तिमोथी,* द लिविंग वर्ड सीरीज़ (ऑस्टिन, टैक्सस: स्वीट पब्लिशिंग कं., 1961), 19 में सभा की बात करते हुए 1 तीमुथियुस 2 पर चर्चा की।

1 कुरिन्थियों 11 पर
जे. डब्ल्यू. मैक्गार्वे[1] की राय

कुरिन्थुस में यूनानी, रोमी और यहूदी रहते थे; और उसकी जनसंख्या के ये तीनों तत्व उस कलीसिया में थे, जिसे पौलुस ने लिखा। यहूदी और रोमी लोग सिर ढक कर आराधना करते थे, जबकि यूनानी लोग नंगे सिर आराधना करते थे। स्वाभाविक है कि इस पर विवाद होना ही था कि किसकी प्रथा सही है। इससे भी बढ़कर बिना किसी संदेह के स्त्रियां इस नियम से परिचित थीं कि आत्मिक बातों में नर-नारी का इतना महत्व नहीं है (गलातियों 3:28), जिस कारण लगता है कि उन्होंने विवाद में पक्ष लेकर उलझन और बढ़ा दी, जिससे उनमें से कुछ लोग यूनानियों के ढंग के अनुसार नंगे सिर आराधना करने के सही होने का दावा करते थे। पौलुस के समय में पूर्व में सब स्त्रियां सिर ढांप कर सार्वजनिक सभाओं में जाती थीं; और इस ओड़नी या पर्दे को अधीनता के प्रतीक के रूप में माना जाता था, जो यह दर्शाता था कि स्त्री पुरुष की शक्ति के अधीन है। इसी कारण यात्री कार्डिन ने कहा कि फारस की स्त्रियां यह दर्शाने के लिए कि वे ''अधीनता में'' हैं, पर्दा करती थीं, जिस तथ्य का पौलुस ने भी इस अध्याय में दावा किया।

स्त्री के मुखिया होने का सांकेतिक महत्व इस विवाद में निर्णायक कारक बन गया। पुरुष के लिए सिर ढक कर आराधना करना सिर को स्त्री बनाने जैसा कार्य था, जो सिर के लिए अपमान की बात थी; और इसी प्रकार स्त्री के लिए नंगे सिर आराधना करना अपमान की बात थी, क्योंकि इसे अनावश्यक स्वतन्त्रता के मज़बूत दावे के रूप में देखा जाना था, जो इस बात का प्रतीक था कि उसने लाज को परे रखकर अपने आप को अपने दायरे से बाहर निकाल दिया है।

इस वचन से यह स्पष्ट है कि मसीहियत समय की कौमी प्रथाओं से अनावश्यक अलग करने के रूप में नहीं थी। मसीही लोगों के लिए अनावश्यक परिवर्तन लाने का अर्थ उन भ्रांतियों में और जोड़ना था, जिन्होंने उन्हें पहले ही सताव में रखा था। मसीह के पीछे चलने वाला अपने आप को विलक्षणता की किसी भी चालाकी को माने बिना अपने आप को प्रमुख तौर पर संसार से अलग पाएगा। पौलुस ने लिखा:

> परन्तु जो स्त्री उघाड़े सिर प्रार्थना या भविष्यवाणी करती है, वह अपने सिर का अपमान करती है, क्योंकि वह मुण्डी होने के बराबर है। यदि स्त्री ओढ़नी न ओढ़े, तो बाल भी कटा ले; यदि स्त्री के लिए बाल कटवाना [कैंची से] या मुंडवाना [उस्तरे से] लज्जा की बात है, तो ओढ़नी ओढ़े (आयतें 5, 6)।

पौलुस ने यह *आज्ञा* नहीं दी कि नंगे सिर स्त्रियों के बाल का काट दिए जाएं बल्कि उसने

तर्कसंगत और उपहासजनक सामंजस्य के रूप में इसकी *मांग* की। स्त्री के लिए मौज में आकर पल्लू उतार देना अपने पति के अधिकार को खुलेआम न मानने का संकेत था। ऐसी अस्वीकृति उसे वेश्या के स्तर तक नीचे ले आती थी, जो अपने बाल कटे सिर के द्वारा अपनी निर्लज्जता को दिखाती थी, जिसका दण्ड उसके बाल मुंडवाने से मिलता था। इसलिए पौलुस ने मांग की कि जो स्वेच्छा से उस स्तर के *सभी* प्रतीकों और चिह्नों को पहनने को राज़ी हों, ताकि वे इससे ऊपर उठने के लिए लज्जित हों।

मानवीय परम्परा से इस प्रकार नियम लेकर पौलुस ने आगे दिखाया कि ईश्वरीय और सृजनात्मक सम्बन्ध इसी नियम पर आधारित हैं: ''पुरुष को अपना सिर ढांपना उचित नहीं, क्योंकि वह परमेश्वर का स्वरूप और महिमा है; ...'' (आयत 7)। पुरुष से ऊपर कोई सृजी वस्तु नहीं है (उत्पत्ति 1:27; भजन संहिता 8:6)। अपनी सृष्टि के स्वभाव के कारण उसे दी गई महिमा के अलावा, उसकी जागीर को परमेश्वर के पुत्र के देह धारण करने के द्वारा महिमा और सम्मान दिया गया है (इब्रानियों 1:2, 3), ताकि मसीह के साथ उसकी संगति के कारण वह पिता की उपस्थिति में बिना ओढ़नी के खड़ा हो सके। इसलिए पुरुष आराधना में सिर ढांप कर सांकेतिक रूप में मसीह के साथ महिमा पाने के अपने अधिकार को त्याग देता है और इस प्रकार अपना ही अपमान करता है। अब हम दास नहीं, बल्कि पुत्र हैं (गलातियों 4:7)। टर्टुलियन ने कहा है, ''हम मसीही लोग बिना शर्म किए *नंगे सिर*; दिल से *बिना उत्साहक के*; निर्दोष *हाथ फैलाकर* प्रार्थना करते हैं।''

> ... परन्तु स्त्री पुरुष की महिमा! क्योंकि पुरुष स्त्री से नहीं हुआ, परन्तु स्त्री पुरुष से हुई है। और पुरुष स्त्री के लिए नहीं सिरजा गया, परन्तु स्त्री पुरुष के लिए सिरजी गई है [देखें उत्पत्ति 2:18, 21, 22]। इसी लिए स्वर्गदूतों के कारण स्त्री को उचित है, कि अधिकार अपने सिर पर रखे (आयतें 7-10)।

पौलुस का तर्क यहां इस प्रकार चलता है: ''जो नियम मैंने आपको दिया है, वह संकेतवाद पर आधारित है, जिसमें पत्नी की अधीनता का संकेत है। यह संकेतवाद सही है; क्योंकि, जैसे परमेश्वर के लघु प्रतिनिधि के रूप में बनाया जाने के कारण पुरुष परमेश्वर से निकला, वैसे ही पुरुष की लघु प्रतिनिधि के रूप में स्त्री भी पुरुष से निकली है। उसकी यह छोटी स्थिति इस तथ्य से स्पष्ट है कि उसे पुरुष के लिए बनाया गया था न कि पुरुष को उसके लिए। इसलिए स्त्रियों को संकेतवाद के कारण, आराधना की जगहों में जाने पर पल्लू नहीं उतारना चाहिए; और वे उस अधीनता से भी छूट नहीं सकती हैं, जिसका इसमें संकेत हैं, क्योंकि यह सृष्टि के अपरिर्वतनीय तथ्यों पर आधारित है। अधीनता के इस न्यायसंगत और मान्य संकेत को त्यागना सेवा करने वाले स्वर्गदूतों की अधीन और आज्ञाकारी आत्मा के लिए चौंकाने वाला होगा (यशायाह 6:2), जो अदृश्य होने के बावजूद आराधना के आपके स्थानों में आपके साथ रहते हैं।'' (देखें मत्ती 18:10; भजन संहिता 138:1; 1 कुरिन्थियों 4:9; 1 तीमुथियुस 5:21; सभोपदेशक 5:6.) पौलुस ने यहां पुराने नियम की सच्चाइयों का समर्थन ही नहीं किया बल्कि इसके ऐतिहासिक तथ्यों की

पुष्टि भी की।

> तौभी प्रभु में [''प्रभु में'' अर्थात ईश्वरीय नियुक्ति के द्वारा] न तो स्त्री बिना पुरुष, और न पुरुष बिना स्त्री के है। क्योंकि जैसे स्त्री पुरुष से है, वैसे ही पुरुष स्त्री के द्वारा है; परन्तु सब वस्तुएं परमेश्वर से हैं (आयतें 11, 12)।

पुरुष कहीं आयत 7 की बात से घमण्ड से अकड़ न जाए, इस कारण पुरुष के ऊपर परमेश्वर और स्त्री के ऊपर पुरुष के ऊंचा होने में कुछ दर्जे तक *अनुपात* बनाते हुए पौलुस ने यह दिखाने के लिए कुछ शब्द जोड़े कि पुरुष और स्त्रियां आपस में एक-दूसरे पर निर्भर हैं, जिस कारण वे लगभग एक जैसे ही हैं, परन्तु यह कि सृजनहार होने के कारण परमेश्वर सबके ऊपर है। इसलिए अनुपात का विचार पूरी तरह से भ्रमित करने वाला है। स्त्री के ओढ़ने और पुरुष के सिर न ढांपने के दो पहले ही दिए गए कारणों में पौलुस ने दो और जोड़ दिए:

> तुम आप ही विचार करो [उसके प्रकृति की रोशनी से चलाए जाने के रूप में, उन्हें उपयुक्तता की अपनी समझ का वास्ता दिया], क्या स्त्री को उघाड़े सिर परमेश्वर से प्रार्थना करना सोहता है? क्या स्वाभाविक रीति से भी तुम नहीं जानते, कि यदि पुरुष लम्बे बाल रखे, तो उसके लिए अपमान है। परन्तु यदि स्त्री लम्बे बाल रखे; तो उसके लिए शोभा है क्योंकि बाल उस को ओढ़नी के लिए दिए गए हैं (आयतें 13-15)।

सहजबुद्धि से हमें यह समझ आना चाहिए कि स्त्री का सिर पुरुष के सिर से अधिक अच्छी तरह ढका हुआ है, क्योंकि प्रकृति इसे बालों की अधिक बहुतायत देती है। पौलुस के समय में किसी मन्नत को छोड़ जैसे नाज़ीरी मन्नत, सब पुरुषों के बाल कटे होते थे। पुरुष के लिए लम्बे बाल होना नीच और कामुक कोमलता का प्रतीक था और उस समय के लेखकों द्वारा ऐसे बाल रखे जाने को देखते हैं। प्रकृति ने स्त्री को पुरुष से अधिक ओढ़नी दी है, इसलिए उसे प्रकृति की इच्छा के अनुसार करना चाहिए और *पुरुष को भी।* पुरुष के स्वभाव वाली स्त्रियों और स्त्री के स्वभाव वाले पुरुषों को पसन्द नहीं किया जाता। पुरुष को पुरुष की तरह और स्त्री को स्त्री की तरह रहना चाहिए। जहां तक पहनावे की बात है, आज भी पुरुषों के लिए स्त्रियों वाले कपड़े और स्त्रियों के लिए पुरुषों वाले कपड़े पहनना समाज में बुरा माना जाता है।

पौलुस ने निष्कर्ष निकाल, ''परन्तु यदि कोई विवाद करना चाहे [इसे कहने का नरम ढंग, ''यदि कोई पुरुष''], तो यह जाने कि न हमारी और न परमेश्वर की कलीसियाओं की ऐसी रीति है'' (आयत 16)। यूनानियों की बहस करने वाली सोच को जानते हुए और इस बात से सचेत कि कुछ लोग उसके तीन कारणों के बावजूद झगड़ा करना चाहेंगे, पौलुस ने इसे चर्चा के क्षेत्र से बिल्कुल निकालकर उदाहरण में डाल दिया। कलीसिया की स्थापित और कायम रीति आरम्भ से ही पौलुस द्वारा दी गई रूपरेखा पर चलती थी, जिसमें दिखाया गया था कि उसके अलावा प्रेरितों ने नियम से या रीति से इसे कायम किया था। एकरूपता

की इस अपनी में पौलुस ने स्पष्ट किया कि सब कलीसियाएं अलग-अलग नहीं बल्कि एक ही रीति बनाने की कोशिश करें। पौलुस यहां इस बात पर चर्चा कर रहा था कि सार्वजनिक आराधना में अगुआई करने के समय पुरुषों और स्त्रियों का पहनावा कैसा होना चाहिए। बाद में उसने बात की कि स्त्रियों को सार्वजनिक आराधना में इस प्रकार भाग लेना चाहिए भी या नहीं (14:34, 35; 1 तीमुथियुस 2:12)।

आज पौलुस के *निर्देश* के परिणामस्वरूप पुरुष नंगे सिर आराधना करते हैं; परन्तु उसके *कारणों* से नहीं। अब यह भक्ति की अभिव्यक्ति है, जिसे उस समय यहूदी लोग अपने जूते उतारकर व्यक्त करते थे। नियम हर युग और जगह में एक ही है कि स्त्री पुरुष के अधीन हो और ऐसे अधिकार का जो उसे नहीं दिया गया, अनुचित, अशिष्ट, शेखी मारने का प्रदर्शन न करें।

टिप्पणी

[1]यह पाठ जे. डब्ल्यू मैक्गर्वे एण्ड फिलिप्प वाई. पैंडलेटन, *थिसलोनियंस, कोरिथियंस, गलेशियंस एण्ड रोमन्स,* स्टैंडर्ड बाइबल कमैंट्री (सिंसिनाटी, ओहायो: स्टैंडर्ड पब्लिशिंग कं., 1916, रिप्रिंट, डिलाइट, आरकैंसा: गॉस्पल लाइट पब्लिशिंग कं., तिथि नहीं), 110-13 से पुन: मुद्रित किया गया है। अनुमति लेकर लिखा और इस्तेमाल किया गया।

कलीसिया में स्त्री की भूमिका

एड सैंडर्स

गत तीन दशकों में लगभग एक पीढ़ी पहले यह प्रश्न उठे कि कलीसिया में स्त्रियों को दी गई भूमिकाओं और पुरुषों को दी गई भूमिकाओं में कोई अन्तर है या नहीं या होना चाहिए कि नहीं। स्त्रियों के अधिकारों का समर्थन करने वाले उत्साही लोगों का मानना है कि स्त्रियों को कोई भी भूमिका दी जानी चाहिए, जो पहले केवल पुरुषों तक सीमित थी। वे इस तथ्य से अपमानित होती हैं कि विशेष कार्य या ''पद'' केवल पुरुषों को ही दिए जाते हैं जबकि कलीसिया के काम और आराधना में स्त्रियों को दूसरे काम दिए जाते हैं। वे स्त्रियों को नेतृत्व देने के लिए कलीसिया में ''सकारात्मक कार्य'' जैसा नियम बनाना चाहते हैं।

एक मानक चुनना

मानवीय प्राथमिकता या सर्वसम्मति के अलावा और ऊंचा मानक न रखने वालों के लिए इस विषय के इर्द-गिर्द के प्रश्नों के उत्तर आवश्यक नहीं हैं। वास्तव में कोई प्रश्न उठना ही नहीं चाहिए। ऐसे लोग ऐसा केवल इसलिए करते हैं *क्योंकि* उन्हें वह अच्छा लगता है, जो वे करते हैं।

जब लोग अपने ही मानकों के अनुसार जीवन बिताते हैं तो परमेश्वर का इस प्रश्न से कोई सम्बन्ध नहीं रहता और पवित्र शास्त्र इसका उत्तर देने को बाध्य नहीं है। ऐसे तर्क से, पुरुष, स्त्री और समय स्त्री को पुरुष की भूमिका में ला देगा।

अठारह सदियों तक डॉक्ट्रिन की कई अन्य बातों पर अलग-अलग होने के बावजूद कई धार्मिक समूह आराधना में और कलीसिया के काम में पुरुषों और स्त्रियों की अलग-अलग भूमिकाओं पर एकमत होते थे। क्यों? ये मामले परमेश्वर के वचन को ध्यान से देखने पर इतने स्पष्ट होते हैं कि उन्हें न समझ पाने की गुंजाइश ही नहीं रहती।

एक बहन से स्त्रियों की एक पुस्तक से एक वाक्य दोहराया: ''जीव विज्ञान भविष्य नहीं है।'' उसने ज़ोर देकर कहा कि कई स्त्रियां पवित्र शास्त्र द्वारा उन्हें दी गई आशिषों, लाभों, फर्जों और दायित्वों से संतुष्ट नहीं हैं।

धार्मिक मामलों में अधिकारात्मक उत्तरों के लिए हम में से जो लोग बाइबल की ओर देखते हैं अर्थात पृथ्वी पर उसकी कलीसिया को बनाने के लिए परमेश्वर की शर्तों का सम्मान करने की चिन्ता करते हैं, उन्हें पता होना चाहिए कि स्त्रियों और पुरुषों पर यदि कोई

सीमाएं हैं तो वे क्या हैं। परन्तु परमेश्वर के निर्देशों के अनुसार सब कुछ करने का निश्चय करने वालों में भी ईमानदारी से कई मतभेद पैदा हो जाते हैं। इन्हें प्रासंगिक वचनों की रोशनी में सुलझाया जाना चाहिए।

पवित्र शास्त्र के मार्गदर्शन की कुछ बातें

1 तीमुथियुस 2 यह जानने के लिए कि कलीसिया में पुरुषों और स्त्रियों के काम पर कोई सीमाएं हैं या नहीं, अध्ययन का महत्वपूर्ण हवाला है। उस संदर्भ में नर-नारी दोनों को ही निर्देश दिया गया। आइए विशेष ध्यान देते हुए कि उसने विशेष रूप से पुरुषों और स्त्रियों को क्या कहा, पूरे विवरण पर गौर करते हैं। हमें मूल नये निमय में इस्तेमाल किए गए शब्दों को भी देखना चाहिए, जो यूनानी भाषा में लिखा गया था, जो कई बार स्थानीय भाषा से अधिक संक्षिप्त होती है।

> अब मैं सब से पहिले यह उपदेश देता हूं, कि विनती, और प्रार्थना, और निवेदन, और धन्यवाद, सब *मनुष्यों* के लिए किए जाएं। राजाओं और सब ऊंचे पद वालों के निमित्त इसलिए कि हम विश्राम और चैन के साथ सारी भक्ति और गम्भीरता से जीवन बिताएं। यह हमारे उद्धारकर्त्ता परमेश्वर को अच्छा लगता, और भाता भी है। वह यह चाहता है, कि सब मनुष्यों का उद्धार हो; और वे सत्य को भली-भांति पहचान लें, क्योंकि परमेश्वर एक ही है: और परमेश्वर और *मनुष्यों* के बीच में भी एक ही बिचवई है, अर्थात मसीह यीशु जो *मनुष्य* है। जिस ने अपने आप को सब के छुटकारे के दाम में दे दिया; ताकि उस की गवाही ठीक समयों पर दी जाए (मैं सच कहता हूं, झूठ नहीं बोलता) कि मैं इसी उद्देश्य से प्रचारक और प्रेरित और अन्यजातियों के लिए विश्वास और सत्य का उपदेशक ठहराया गया (1 तीमुथियुस 2:1-7)।

पौलुस ने इन सात आयतों में ''मनुष्य'' या ''मनुष्यों'' के लिए एक शब्द का इस्तेमाल किया। हर जगह वह शब्द *anthropos* है, जो ''मनुष्य'' अर्थात ''मनुष्यजाति'' के लिए जिसमें नर, नारी और बच्चे सब शामिल हैं, यूनानी शब्द है। अंग्रज़ी शब्द ''एंथ्रोपोलॉजी'' (जिसका अर्थ मनुष्यजाति का अध्ययन है) उसी शब्द से निकला है, जिसका पौलुस ने यहां इस्तेमाल किया है।

पौलुस ने कहा:

> सो मैं चाहता हूं, कि हर जगह *पुरुष* बिना क्रोध और विवाद के पवित्र हाथों को उठाकर प्रार्थना किया करें। वैसे ही *स्त्रियां* भी संकोच और संयम के साथ सुहावने वस्त्रों से अपने आपको संवारे; न कि बाल गूंथने, और सोने, और मोतियों, और बहुमोल कपड़ों से, पर भले कामों से। क्योंकि परमेश्वर की भक्ति ग्रहण करने वाली *स्त्रियों* को यही उचित भी है। और *स्त्री* को चुपचाप पूरी आधीनता से सीखना

चाहिए। और मैं कहता हूं, कि *स्त्री* न उपदेश करे, और न *पुरुष* पर आज्ञा चलाए, परन्तु चुपचाप रहे (1 तीमुथियुस 2:8-12)।

सब पुरुषों, स्त्रियों और बच्चों को सम्बोधित करने के बाद पौलुस ने नर और नारी के रूप में पुरुषों और स्त्रियों के विशेष दायित्वों की बात करने के लिए आयत 8 में कुछ रुखेपन से आरम्भ किया। उसने यह चर्चा अध्याय के शेष भाग के लिए जारी रखी। यहां ''पुरुषों'' या ''पुरुष'' कहकर उसने नर या पति के लिए विशेष शब्द का इस्तेमाल किया। इस शब्द के दो रूप हैं: *aner* और *andros.* इसी प्रकार ''स्त्री'' या ''स्त्रियां'' कहते हुए पौलुस ने महिला या पत्नी के रूप में स्त्री के लिए विशेष यूनानी शब्द *gune* का इस्तेमाल किया, जिससे हमें महिलाओं या पत्नियों के लिए डॉक्टर का ''गाइनीकोलोजिस्ट'' शब्द मिला है।

पुरुषों के लिए निर्देश

मिल-जुले समूह में आराधना के लिए निर्देश देते हुए पौलुस ने कहा कि पुरुष उपयुक्त ढंग से और उपयुक्त आत्मिक स्थिति के साथ प्रार्थना करें। उसने उन्हें ऐसे व्यवहार से बचने के लिए कहा, जिससे फलदायक प्रार्थना में हस्तक्षेप होता हो।

पुरुषों को प्रार्थना करनी है
के साथ: पवित्र हाथों;
बिना: क्रोध, विवाद के।

महिलाओं के लिए निर्देश

जिस प्रकार आराधना में पुरुषों को सही आचरण करने का निर्देश है, वैसे ही महिलाओं को भी है। मिले-जुले लोगों के समूह में स्त्रियों के लिए आराधना करने के निर्देश दिए गए हैं।

स्त्रियां अपने आपको संवारें
के साथ: सुहावने वस्त्रों, संकोच, संयम, भले कामों;
बिना: बाल गूंथने, सोने, मोतियों और बहुमोल कपड़ों के।
महिलाएं सीखें
पूरी अधीनता से, चुपचाप;
उपदेश करके या पुरुष पर आज्ञा चलाकर नहीं।

पवित्र शास्त्र के मार्ग दर्शन पर प्रतिक्रियाएं

इस शिक्षा के परिणामस्वरूप पौलुस के बारे में और परमेश्वर के बारे में कई बहुत कठोर टिप्पणियां हुई हैं।

1. कइयों का दावा है कि पौलुस की बात को वैसे ही नहीं समझा जाना चाहिए। जब उसने विशेष रूप से कहा कि मसीही सभा में कुछ दायित्वों को निभाना पुरुषों का काम है,

जिनमें उसी सभा में स्त्रियों को मनाही है, तो यह बात सांकेतिक कैसे हो सकती है ?

2. कइयों का कहना है कि ये पाबन्दियां केवल सांस्कृतिक हैं। पौलुस ने निश्चय ही उनके लिए सांस्कृतिक कारण नहीं बताए। उसने नर और नारी की सृष्टि के क्रम को बताते हुए सीधे आज्ञा दी और कहा कि पाप का आगमन पहली स्त्री के अगुआ बनने पर हुआ था। उसने दावा किया कि स्त्री के लिए परमेश्वर द्वारा दिया गया मूल स्वभाव घरेलू है और इसी भूमिका में उसे उद्धार मिलता है। क्या इसमें कोई सांस्कृतिक बात दिखाई देती है ?

3. कइयों का तो यह भी कहना है कि पौलुस यहूदी रब्बी का पूर्वाग्रह ही दिखा रहा था। पौलुस को परमेश्वर की प्रेरणा थी (1 कुरिन्थियों 14:37) और पतरस ने उसके अधिकार की पुष्टि की (2 पतरस 3:15-17)। उसकी शिक्षाएं उसका अपना विचार या पूर्वाग्रह नहीं थीं।

4. कइयों का कहना है कि अलग-अलग जगह स्त्रियों पर पौलुस की शिक्षाओं से स्पष्टता के बोध और स्त्रियों के लिए उसकी अपनी नापसन्दगी में पौलुस की कशमकश दिखाई देती है। हां, एक फरीसी के रूप में पौलुस परमेश्वर का धन्यवाद करते हुए कि वह एक अन्यजाति, दास या स्त्री नहीं है, दिन में तीन बार प्रार्थना करता था। परन्तु अपने मन परिवर्तन के बाद इसी आदमी ने कहा, ''अब न कोई यहूदी रहा और न यूनानी; न कोई दास, न स्वतन्त्र; न कोई नर, न नारी; क्योंकि तुम सब मसीह यीशु में एक हो'' (गलातियों 3:28)। पौलुस मनुष्य के *महत्व* को समझता था और उसने यह स्पष्ट किया कि एक मनुष्य किसी भी दूसरे मनुष्य जितना मूल्वान है।

5. कइयों का दावा है कि पौलुस ने अस्पष्ट वचनों की ओर ध्यान दिलाया। उसका ध्यान दिलाना परमेश्वर की प्रेरणा पाए हुए भविष्यवक्ताओं और शिक्षकों की बातों को स्पष्ट करना था! उसने सृष्टि के और मनुष्यजाति के आरम्भिक इतिहास के उत्पत्ति की पुस्तक के विवरण की ओर ध्यान दिलाया। सच तो यह है कि उत्पत्ति की पुस्तक चौंकाने वाली स्पष्टता से मनुष्य की स्थिति का बखान करती है।

6. अन्त में कई यह तर्क देते हैं कि पौलुस ने नर-नारी के सम्बन्ध पर कोई बात असल में कही ही नहीं। उनका कहना है कि इस विषय पर जिन वचनों का अध्ययन हमने किया है, वे पौलुस द्वारा नहीं लिखे गए थे। ऐसे दावे करने वाले लगता नहीं है कि यह ध्यान देते हैं कि यदि ये वचन धोखा हैं तो हमें आराधना से अपने आप को कभी नहीं जोड़ना चाहिए! पवित्र शास्त्र में भरोसे के बिना हम बिना जहाज या दिक्सूचक के अथाह सुमद्र में बहेंगे। वही प्रेरित जिसने कलीसिया को मसीह की देह बताते हुए लिखा, जो पृथ्वी पर सब छुड़ाए हुओं को कहा गया है और खोई हुई मनुष्यजाति के उद्धार के लिए मसीह का माध्यम है, जिसने उस कलीसिया की संगठित आराधना के बारे में लिखा। उसने इसके नेतृत्व, इसके व्यवहार और नर-नारी के बीच के सम्बन्ध के बारे में परमेश्वर की प्रेरणा से निर्देश दिया है।

एक बहन ने कहा कि परमेश्वर के लिए स्त्री को किसी ऐसी बात से मना करना जो वह पुरुष को करने की अनुमति देता है, अनैतिक बात होगी! मैंने उससे पूछा, ''क्या परमेश्वर के लिए *अविवाहित पुरुष* को एल्डर या डीकन के रूप में सेवा करने से मना

करना अनैतिक बता है ?''

पवित्र शास्त्र के मार्ग दर्शन के पीछे के तर्क का आधार

पौलुस का निर्देश कोई निरर्थक आधिकारिक अभ्यास नहीं था। अपनी शिक्षा के उसने यह कारण दिए:

> क्योंकि आदम पहिले, उसके बाद हव्वा बनाई गई। और आदम बहकाया न गया, पर *स्त्री* बहकाने में आकर अपराधिनी हुई। तौभी *स्त्रियां* बच्चे जनने के द्वारा उद्धार पाएंगी, यदि वे संयम सहित विश्वास, प्रेम, और पवित्रता में स्थिर रहें (1 तीमुथियुस 2:13-15)।

(1) पौलुस के निर्देश अर्थात परमेश्वर की प्रेरणा से दी आज्ञा, (2) सृष्टि के क्रम, (3) स्त्री के अदन की वाटिका में नेतृत्व की भूमिका लेने और स्त्री के भरमाए जाने से होने वाले विनाश के कारण और (4) इस तथ्य के कारण कि स्त्री की सही भूमिका घरेलू है, पुरुष (नर) को ही सार्वजनिक आराधना में अगुआई करनी चाहिए।

यह निर्देश पुरुषों पर स्त्रियों के अधिकार चलाने पर पौलुस की सब शिक्षाओं से मेल खाता है। विशेष परिस्थितियों में *स्त्रियां सिखाने का काम करें। वे प्रचार न करें,* क्योंकि प्रचार अधिकार का इस्तेमाल करके किया जाता है। 1 तीमुथियुस 2:11, 12 की तुलना तीतुस 2:15 करें:

> स्त्री को चुपचाप पूरी आधीनता से सीखना चाहिए। और मैं कहता हूं, कि स्त्री न उपदेश करे, और न पुरुष पर आज्ञा चलाए, परन्तु चुपचाप रहे। (1 तीमुथियुस 2:11, 12)।

> पूरे अधिकार के साथ ये बातें कह, और समझा और सिखाता रह: कोई तुझे तुच्छ न जानने पाए (तीतुस 2:15)।

मूल भाषा में, पौलुस के वाक्यांश ''पूरी अधीनता से'' (1 तीमुथियुस 2:11) में *hupotage* शब्द का इस्तेमाल किया गया है, जिसका अर्थ है ''अधिकार में।''[1] पौलुस ने तीतुस को ''पूरे अधिकार'' के साथ प्रचार करने के लिए कहा, यह अभिव्यक्ति *epitage* है, जिसका मूल अर्थ ''के ऊपर अधिकार'' है। इस प्रकार स्त्रियों को *अधिकार में* कहा गया है, जबकि प्रचारक को अपना काम *के ऊपर अधिकार* के साथ करना है। इस अन्तर को छोड़ना असम्भव है। स्त्रियों को कलीसिया की सभा में अधिकारात्मक रूप से सम्बोधित नहीं करना चाहिए।

पवित्र शास्त्र के मार्ग दर्शन का सम्मान करना

पवित्र शास्त्र कलीसिया में स्त्रियों की उपयुक्त भूमिका के कई ढंग उपलब्ध कराता है। नीचे दी गई आयतों से हम देखते हैं कि स्त्री पुरुष के अधीन है: (1) ईश्वरीय सृष्टि की तरतीब (उत्पत्ति 2:7, 18-23; 1 कुरिन्थियों 11:3); (2) ईश्वरीय नियम (उत्पत्ति 3:16; 1 कुरिन्थियों 14:34); (3) विशेष प्रेरिताई आज्ञा (कुलुस्सियों 3:18; 1 तीमुथियुस 2:8-15); (4) स्वीकृत नमूना (1 पतरस 3:5) और (5) शारीरिक और भावनात्मक बनावट (1 पतरस 3:7)।

अधीनता की अपनी भूमिका को पहचानना किसी भी स्त्री को कम नहीं कर देता। *यह उसे परमेश्वर की आज्ञाकारी बना देता है!* अपनी भूमिका को न मान पाना उसे विद्रोही बना देता है। *यह पाप है!*

पुरुष/स्त्री सम्बन्धों की चर्चा 1 कुरिन्थियों 11:3-9 में स्पष्टता से की गई है:

पुरुष स्त्री का *सिर* है, वैसे ही जैसे मसीह पुरुष का सिर है और परमेश्वर मसीह का सिर है। जब कोई यह समझ लेता है कि सिर कम *नहीं* है तो किसी प्रकार का आहत होना या अपमान नहीं होता। सिर अधिक मूल्य का नहीं है। *सिर अगुवा, मार्गदर्शक और शासक है।*

स्त्री पुरुष के *मातहत* है। मातहत होने का अर्थ घटिया होना *नहीं* है। जो मातहत होता है, वह *सहायक* होता है, दूसरे के *नेतृत्व* में होता है और दूसरे द्वारा *शासित* होता है। अन्तर *मूल्य* में नहीं है। यह अन्तर *कार्य* में है!

आइए हम निष्कपट हों। क्या पौलुस ने स्त्री को रसोईघर में बान्ध दिया। उसे लॉण्ड्री में बन्द कर दिया, शयन कक्ष में रोक दिया, या उसे शिशु गृह में जकड़ दिया? उसने इनमें से किसी विचार का सुझाव नहीं दिया क्योंकि वह स्त्रीत्व का आदर करता था और हव्वा की बहुत सी बेटियों के योगदान की सराहना करता था, जिन्होंने मसीह की देह को बनाया। कई स्त्रियां स्वयं पौलुस के लिए बड़ी सहायक थीं। इसके अलावा पौलुस इस विचार को देने वाला अकेला नहीं था। पौलुस या बाइबल के किसी भी अन्य लेखक ने स्त्रीत्व के मातहत होने की ऐसी कोई बात नहीं कही जो *परमेश्वर और मनुष्य के साथ स्त्री के योगदान* के बारे में उन्हीं लेखकों की बात के विरुद्ध हो:

> तब परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार उत्पन्न किया, अपने ही स्वरूप के अनुसार परमेश्वर ने उसको उत्पन्न किया, *नर और नारी करके उस ने मनुष्यों की सृष्टि की* (उत्पत्ति 1:27)।
>
> ... अब यह मेरी हड्डियों में की हड्डी और मेरे मांस में का मांस है: सो इसका नाम नारी होगा, क्योंकि यह नर में से निकाली गई है (उत्पत्ति 2:23)।
>
> सो वे अब दो नहीं, *परन्तु एक तन हैं*: ... (मत्ती 19:6)।
>
> ... जो हमारी बहिन और किंखिया की कलीसिया की सेविका है, ... वह भी बहुतों

की बहन मेरी भी उपकारिणी हुई है (रोमियों 16:1, 2)।

तौ भी प्रभु में न तो स्त्री बिना पुरुष, और न पुरुष बिना स्त्री के है (1 कुरिन्थियों 11:11)।

अब न कोई यहूदी रहा और न यूनानी; न कोई दास, न स्वतन्त्र; न कोई नर, न नारी; क्योंकि तुम सब मसीह यीशु में एक हो (गलातियों 3:28)।

... पति अपनी-अपनी पत्नी से अपनी देह के समान प्रेम रखें, जो अपनी पत्नी से प्रेम रखता है, वह अपने आप से प्रेम रखता है (इफिसियों 5:28)।

और मुझे तेरे उस निष्कपट विश्वास की सुधि आती है, जो पहिले तेरी नानी लोईस, और तेरी माता यूनीके में थी, ... तुझ में भी है (2 तीमुथियुस 1:5)।

वैसे ही हे पतियो, तुम भी बुद्धिमानी से पत्नियों के साथ जीवन निर्वाह करो और स्त्री को निर्बल पात्र जानकर उसका आदर करो, यह समझकर कि हम दोनों जीवन के वरदान के वारिस हैं, जिससे तुम्हारी प्रार्थनाएं रुक न जाएं (1 पतरस 3:7)।

सारांश

पवित्र शास्त्र में स्त्री हमेशा पुरुष के अधिकार (नेतृत्व) के अधीन रही है (1 तीमुथियुस 2:8-15; 1 कुरिन्थियों 11:12)। यह मूल्य का नहीं, बल्कि *कार्य* का मामला है। किसी भी प्रकार से अधीन होना उसे मसीही सेवा से रोकता नहीं होना चाहिए। पुरुषों को परिवार और सार्वजनिक आराधना की भूमिकाएं दी गई हैं। पुरुष के लिए अपनी भूमिका को *नजरअंदाज़* करना उतना ही पापपूर्ण है, जितना किसी स्त्री के लिए उस भूमिका को पाने की कोशिश करना, जो परमेश्वर ने उसके लिए नहीं चाही। आइए हम परमेश्वर का भय मानने वाली अपनी स्त्रियों को सम्मान दें और उन्हें अपने जैसी और स्त्रियां खड़ी करने के लिए प्रोत्साहित करें!

नये नियम की स्त्रियां

प्रसिद्ध

हन्ना, जो यीशु के सम्पर्ण के समय मन्दिर में थी (लूका 2:36, 37)।

मरियम, यीशु की माता (लूका 1:27-30)।

मरियम मगदलीनी, जिसने यीशु की सेवा की और उसकी कब्र पर ''वहां थी'' (मत्ती 27:55-61)।

मरियम, क्लोपास की पत्नी, जो यीशु के क्रूस पर चढ़ाए जाने के समय क्रूस के पास थी (यूहन्ना 19:25)।

मरयिम, यूहन्ना मरकुस की माता (प्रेरितों 12:12)।

दोरकास, विधवाओं की सहेली (प्रेरितों 9:36-39)।

शलोमी, याकूब और यूहन्ना की माता (मत्ती 27:55, 56; मरकुस 16:1)।

प्रिसकिल्ला, जिसने अपने पति अक्विला के साथ अपुल्लोस को वचन सुनाया (प्रेरितों 18:24-26)।

फीबे, जिसने रोमी कलीसिया को पत्र पहुंचाया (रोमियों 16:1)।

लुदिया, फिलिप्पी की परमेश्वर का भय मानने वाली कारोबारी स्त्री (प्रेरितों 16:14)।

बदनाम

हेरोदियास, फिलिप्पुस और अन्तिपास की पत्नी (मरकुस 6:17-25)।

शलोमी, हेरोदियास की बेटी जिसने यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले का सिर मांगा था (मरकुस 6:22)।

सफ़ीरा, हनन्याह की पत्नी, जिसने अपने पति के साथ मिलकर, साजिश की और परमेश्वर से झूठ बोला था (प्रेरितों 5:1)।

यूओदिया और **सुंतुखे,** जिन्हें ''एक मन'' होकर रहने के लिए कहा गया था (फिलिप्पियों 4:2)।

इज़ेबेल थुआतीरा की रहने वाली, जिसने मसीह के दासों को अपने पीछे लगा लिया था (प्रकाशितवाक्य 2:20)।

एड सैंडर्स

एक स्त्री मसीही कैसे बन सकती है?

ओवन ऑलब्रट

बेशक यीशु को परमेश्वर के पुत्र के रूप में पहचनाने वाला सबसे पहला व्यक्ति यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला था (यूहन्ना 1:29-34), परन्तु कुएं पर मिलने वाली स्त्री ने सबसे पहले यीशु का मसीह होना स्वीकार किया था (यूहन्ना 4:25, 26)। वह नाम से तो अज्ञात है, परन्तु सामरी होने के कारण वह ऐसी स्त्री थी, जो यहूदियों से नहीं मिल सकती थी। तौ भी उसे यीशु को बाइबल के महान सबकों में से एक सिखाते सुनने का अवसर मिला था (यूहन्ना 4:21-24)। वह उससे प्रभावित हो गई और जाकर नगर के लोगों से पूछने लगी ''कहीं यही तो मसीह नहीं है?'' (यूहन्ना 4:29)।

सबसे पहली और बपतिस्मा लेने के लिए आगे आने वाली एकमात्र स्त्री लुदिया है (प्रेरितों 16:14, 15)। कइयों का विचार है कि ''लुदिया'' उसका नाम होने के बजाय एक पदनाम था, क्योंकि वह लुदिया के नगर थुआतीरा की रहने वाली थी। परन्तु वचन यह संकेत देते हुए कि लूका को लगा कि उसका नाम देना सही रहेगा, कहता है कि उसका ''नाम लुदिया'' था। लूका ने बपतिस्मा लेने वाले केवल तीन अन्य व्यक्तियों का नाम दिया, जिनमें यीशु (लूका 3:21), शमौन (प्रेरितों 8:13) और शाऊल (प्रेरितों 9:17, 18) हैं। उसने खोजे (प्रेरितों 8:27-39) और दारोगे (प्रेरितों 16:25-34) का उल्लेख किया, जिन्हें बपतिस्मा दिया गया था, परन्तु उनके नाम नहीं दिए। उसने यह भी लिखा कि कुरनेलियुस के घराने को बपतिस्मा लेने की आज्ञा दी गई थी (प्रेरितों 10:48)।

लुदिया अवश्य कोई प्रसिद्ध स्त्री होगी। वह कारोबारी स्त्री थी और इस तथ्य के आधार पर कि वह महंगे बैंजनी वस्त्र बेचा करती थी, जिन्हें शान के प्रतीक के रूप में ऊंचे पद वाले अधिकारी और लोग पहनते थे, एक धनाढ्य स्त्री थी। उसका घर इतना बड़ा था कि पौलुस, सीलास, तीमुथियुस और शायद पौलुस के सहयात्री भी, वहां रुके थे। उसका परिवार था, जिसमें नौकर भी होंगे।

पौलुस एशिया के त्रोआस से फिलिप्पी में आया था, जहां उसे लुदिया और परमेश्वर का भय मानने वाली और स्त्रियां प्रार्थना करती मिलीं। पौलुस से वचन ध्यान से सुनने पर प्रभु ने उसका मन खोल दिया था। कइयों का मानना है कि परमेश्वर ने सीधे हस्तक्षेप से उसका मन खोला था, परन्तु अधिक सम्भावित व्याख्या यह है कि उसका मन दूसरों के मन खुलने की तरह ही खुला था यानी प्रभु के संदेश को सुनकर, जिसका प्रचार पौलुस ने किया था। यीशु ने निर्देश देकर प्रेरितों के मन खोले थे (लूका 24:45)। पिन्तेकुस्त के दिन पतरस के प्रमाण से कि यीशु ही मसीह है, यहूदी लोगों के मन इतने पिघल गए कि वे पतरस से पूछने लगे कि उन्हें क्या करना चाहिए (प्रेरितों 2:37)। परतस ने उत्तर दिया, ''मन

फिराओ, और तुम में से हर एक अपने-अपने पापों की क्षमा के लिए यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले; तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे'' (प्रेरितों 2:38)।

फिर पतरस ने बताया कि यह प्रतिज्ञा, ''सब दूर-दूर के लोगों के लिए भी है'' (प्रेरितों 2:39)। पौलुस ने ''दूर'' शब्द का इस्तेमाल अन्य जातियों के लिए किया (इफिसियों 2:13)। लुदिया ''दूर'' के लोगों में से थी, जो सुसमाचार के संदेश पर विश्वास करके, मन फिराकर और बपतिस्मा लेकर अपने मन को खोलकर यीशु के नाम में क्षमा पा सकती थी। उसने भरोसा करते हुए सच्चे मन से पौलुस को ग्रहण किया। उसे अपने पापों की क्षमा के लिए यीशु के लहू में अपने विश्वास के कारण बपतिस्मा दिया गया था।

बेशक पौलुस ने उसे वही संदेश बताया, जो उसने उन मसीही लोगों के लिए लिखा था, जो ''उसी के साथ बपतिस्मे में गाड़े गए,'' ''विश्वास करके ... उसके साथ जी भी उठे,'' और ''[उनके] अपराधों को क्षमा किया गया'' (कुलुस्सियों 2:12, 13)। इस प्रकार वे यीशु में आ गए अर्थात उसे पहन लिया (गलातियों 3:27) और मसीह में नया जीवन बिताने लगे (रोमियों 6:3, 4; 2 कुरिन्थियों 5:17)।

कई लोग इस तथ्य का कि लुदिया के ''घराने'' को बपतिस्मा दिया गया था, इस्तेमाल यह प्रमाण देने के लिए करते हैं कि नवजात शिशुओं का बपतिस्मा होना चाहिए। ऐसी मान्याताओं से दो कठिनाइयां आती हैं। पहली तो यह कि नवजात शिशुओं का कोई उल्लेख नहीं है। (नवजात शिशुओं वाले घरों की गितनी बिना नवजात शिशुओं वाले घरों से कहीं कम हैं।) दूसरा यह संकेत है कि वह विवाहित नहीं थी। उसने ''हमारे घर'' के बजाय ''मेरे घर'' आने के लिए कहा, जो इस बात का संकेत है कि उसका पति नहीं था।

हो सकता है कि लुदिया यूरोप की सबसे पहली परिवर्तित मसीही हो, जिससे सुसमाचार सुनने के लिए अन्य लाखों लोगों के लिए द्वार खुल गया। हम इस भली स्त्री के नमूने को मानकर बहुत अच्छा करेंगे। उसने यीशु में भरोसा किया और अपने प्रभु के गाड़े जाने और जी उठने में सहभागी होकर उसकी वफादार अनुयायी बन गई। ऐसा करके वह अपने पिछले जीवन से मर गई और यीशु के लिए नया जीवन जीने लगी (रोमियों 6:4)।